साधना सत्संग के नियम

1. साधना सत्संग व अखण्ड जाप में इस सत्संग द्वारा दीक्षित साधक ही सम्मिलित किए जाते हैं।
2. साधना सत्संग में पूर्व अनुमति प्राप्त साधक ही भाग लेते हैं।
3. अस्वस्थ, अधिक वृद्ध एवं 14 वर्ष की आयु से कम के साधकों को सामान्यतः सम्मिलित होने की अनुमति नहीं दी जाती।
4. एकादशी आदि कोई भी व्रत रखने वाले साधकों के लिए विशेष भोजन की व्यवस्था नहीं की जा सकेगी, यह समझकर ही साधना सत्संग में नाम देवें।
5. मौसम के अनुसार वस्त्र, बिस्तर, नित्य के उपयोग की वस्तुओं के अतिरिक्त श्री भक्तिप्रकाश, गीताजी, मालातथा भोजन हेतु बर्तन(कटोरा, गिलास,चम्मच,थाली)साथ लाना आवश्यक है।
6. साधना सत्संग के पूर्व एवं पश्चात् साधकगण भोजन आदि हेतु स्थानीय प्रबन्धकों पर बोझ न बने। प्रत्येक साधक खान–पान सम्बन्धी अपना प्रबन्ध स्वयं करें। स्थानीय प्रबन्धक भी इस हेतु कोई आग्रह न करें।
7. यहां बातें करना, पत्र लिखना, समाचार पत्र व अन्य पुस्तकें पढ़ना तथा टेलीफोन करना आदि
निषेध है। भ्रमण करते समय भी मौन धारण कर जाप करें।
8. धूम्रपान, पान मसाला एवं नसवार आदि का सेवन वर्जित है।
9. सत्संगों में फोटोग्राफी निषिद्ध है।
10. स्वागत हेतु फूल एवं मालाएं प्रयोग न की जाएं। सजावट के लिए भी फूलों का प्रयोग निमित मात्र ही हो।
11. बाहर से कुछ भी क्रय कर खाना पीना निषेध है। अपने कमरों में दवाई के अतिरिक्त अन्य किसी खाद्य वस्तु का सेवन न करें। यदि किसी भी वस्तु की आवश्यकता पड़े तो सर्वाधिकारी से अनुमति लें।
12. अपने जूते–चप्पलें यथा स्थान पंक्तियों में ही रखें। सत्संग स्थल के भीतर जूते, चप्पल न पहनें।
13. कार्यक्रम के बीच से सत्संग हॉल में से उठ कर जाना तथा आना नहीं चाहिए। यदि कोई विशेष कारण से उठना आवश्यक हो तो हॉल से बाहर सबसे पीछे बैठें।
14. सत्संग हॉल में बातें करना पूर्ण रूप से निषेध है तथा पंक्तियों में ही पास पास बैठना आवश्यक है।
15. खांसी, डकार, जम्माई, छींक आदि आने पर शिष्टता का ध्यानरखें।
16. शान्ति तथा स्वच्छता का सदैव ध्यान रखिये।
17. सत्संग हॉल में आते समय अपने कमरों की बत्तियाँ, नल व पंखे, दरवाज़े आदि बन्द करके कुण्डी लगाकर आवें।
18. साधना सत्संग साधक की वेशभूषा शिष्ट व सलीकेदार हो, कमरे के बाहर केवल बनियान, अंडरवियर व लूंगी आदि पहन कर न आवें। कृपया महिलायें भी बिना दुप्पटे के अपने कमरे से बाहर न आवें।
19. सत्संग स्थल का पानी व बिजली अनावश्यक खर्च न करें।

20. प्रत्येक कार्यक्रम में घण्टी बजने से कम से कम पाँच मिनट पूर्व हॉल में शीघ्रता से आवें। ढीले–ढाले चलकर आना अच्छा नहीं है।
21. सारा समय राम नाम जाप, श्री गीता जी का पाठ, स्वाध्याय, मनन तथा सेवा में बिताना सत्संग की मुख्य प्रेरणा है।
22. सत्संग में श्री राम धुनों एवं पुराने सन्त भक्त कवियों के भजनों को ही प्रमुखता दें। निराशावादी भजन नहीं गाए जावें।
23. भोजन धीरे–धीरे चबा–चबाकर करें। जूठन न छोड़ें। जितना चाहिए उतना ही भोजन लें तथा अधिक न माँगें। अपने बर्तन स्वयं साफ करें।
24. सत्संग में अन्न, जन और धन–कथा करना निषेध है।
25. साधनकाल में पति–पत्नी का परस्पर मेल व वार्तालाप न हो।
26. अखण्ड जाप में अपनी बारी(डयूटी) भाव–चाव से देनी चाहिए अगली बारी के साधक आ जाने पर ही उठें। रात्रि में कोई एक साधक पांच मिनट पूर्व उठकर अगली बारी के साधकों का जगा कर जाप में भेजे। पुरुषों की बारियाँ रात्रि में तथा महिलाओं की दिन में रखी जाती हैं।
27. साधक जन अपने बैठने के स्थान से ही परमेश्वर को नमस्कार करें। श्री अधिष्ठान जी के समीप नमस्कार करना आवश्यक नहींहै।
28. किसी भी प्रकार का चढ़ावा अथवा भेंट स्वीकार न करना, चरण स्पर्श न करना–कराना, आडम्बर– विहीनता, मत–विहीनता, समयबद्धता, शिष्टाचार एवं अनुशासन सत्संग की विशेषताएं हैं जिनका हमें सदैव पालन करना चाहिए।
29. पूर्ण उत्साह तथा मनोभाव से सभी कार्यक्रम में सम्मिलित हों।
30.साधना सत्संग में नए–पुराने, छोटे–बड़े, अमीर–गरीब तथा ऊँच–नीच का भाव मन में न लाकर परस्पर नम्रता, सौजन्यता, सहचर्य भाव तथा प्रीतिपूर्वक व्यवहार करें।
31. छोटी–छोटी त्रुटियों एवं असुविधाओं पर ध्यान न देकर परस्पर अधिक से अधिक सामन्जस्य रखें। हमारी थोड़ी सी असावधानी से कार्यक्रम की मधुरता कम न हो जावे, इसका सदैव ध्यान रखना चाहिए।
32. साधक गण व्यवस्थापक की सहमति से विभिन्न सेवाओं में अधिक से अधिक स्वेच्छा से भाग लें। पूर्ण उत्साह, शक्ति, तत्परता तथा लगन से सेवा करना सत्संग की अपनी मौलिक शिक्षा है जो भविष्य में करते रहना चाहिए।
33. पुराने साधक आदर्श बनें, नयों को सिधायें और बनायें। नये भी सीखने का प्रयत्न करें।
34. विनोद सभा में चुटकले शिष्ट, स्वच्छ,मर्यादित व प्रिय हों व किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर न हों।
35. साधना सम्बन्धी तथा सैद्धान्तिक शंकाओं का निवारण किसी विशिष्ट व्यक्ति से कर लेना ठीक है। प्रत्येक व्यक्ति का मत जानना ठीक नहीं तथा परस्पर वाद–विवाद करना उचित नहीं है।
36. श्री रामशरणम् सत्संग भवन, हरिद्वार के कलश पर कृपया कपड़े न सुखाइए।